

अरस्तू का विरेचन-सिद्धांत

डॉ. पूजा (स.आ.)

हिन्दी विभाग

जैन कन्या पाठशाला (पी.जी.) कॉलेज मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

- विरेचन-सिद्धांत न सिर्फ अरस्तू का बल्कि पाश्चात्य काव्यशास्त्र का एक अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत है। अरस्तू का यह बहुचर्चित विरेचन सिद्धांत उनके गुरु प्लेटो के अनुकृति सिद्धांत के विरोध का परिणाम है। अरस्तू ने प्लेटो के अनुकरण सिद्धांत का विरोध करते हुए उनके इस कथन का भी प्रतिवाद किया था कि काव्य मनुष्य की वासना का पोषण करता है और उसे विकारग्रस्त बनाता है अरस्तू की मान्यता है कि काव्य के अनुशीलन और प्रेक्षण से अतिरिक्त मनोविकार विरचित हो कर शमित और परिष्कृत हो जाते हैं तथा इससे सहृदय को आनंद की प्राप्ति होती है।

पोएटिक्स के छठे अध्याय में अरस्तू ट्रेजेडी के विवेचन क्रम में विरेचन की चर्चा करते हुए कहते हैं कि “त्रासदी किसी गंभीर स्वतः पूर्ण तथा निश्चित आयाम से युक्त कार्य की अनुकृति का नाम है, जिसका माध्यम नाटक के भिन्न-भिन्न भागों से भिन्न भिन्न रूप से प्रयुक्त सभी प्रकार के कारणों से अलंकृत भाषा होती है, जो समाधान रूप में होकर कार्य व्यापार रूप में होती है और जिसमें करुणा तथा त्रास के उद्रेक द्वारा इन मनोविकारों का उचित विरेचन किया जाता है।

विरेचन का अर्थ -

अरस्तू द्वारा मूल प्रयुक्त यूनानी शब्द कैथार्सिस है, जिस का हिंदी रूपांतरण विरेचन है। विरेचन भारतीय चिकित्सा शास्त्र का पारिभाषिक शब्द है और कैथार्सिस यूनानी चिकित्सा शास्त्र का। रेचन, परिष्करण इत्यादि विरेचन के प्रायवाची शब्द हैं। विरेचन का अर्थ है विचारों का निष्कासन या शुद्धि। चिकित्सा शास्त्र में इसका अर्थ है रेचक औषधियों द्वारा शरीर के मल या अनावश्यक एवं अस्वास्थ्य कर पदार्थ का वाह्य निष्कासन कर शरीर व्यवस्था को शुद्ध और स्वस्थ करना।

डॉक्टर देवेन्द्र नाथ शर्मा लिखते हैं कि - ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, मोह, क्रोध इत्यादि मानसिक मनुष्य को अस्वस्थ बनाया करते हैं। स्वास्थ्य के लिए जिस प्रकार शारीरिक मलका निष्कासन शोधक जरूरी है, उसी प्रकार मानसिक मल का निष्कासन शोधन भी।

अरस्तु के विभिन्न व्याख्या कार और विरेचन का अर्थ-

- अरस्तु के व्याख्या कारों ने विरेचन के चार अर्थ किए हैं।-
- १. **चिकित्सा परक अर्थ**-वर्जिज, डेचेज सरीखे विद्वानों ने विरेचन का चिकित्सा परक अर्थ प्रकट करते हुए कहा है कि जिस प्रकार रेचक द्वारा उदर की शुद्धि होती है, उसी प्रकार त्रासदी का विरेचन मन को शुद्ध करता है।
- २ **धर्म परक अर्थ** -विरेचन का धर्म पारक अर्थ करने वालों में प्रोफेसर गिलबर्ट मर्ने मुख्य हैं। डॉ नगेंद्र ने लिखा है कि- यूनान की धार्मिक संस्थाओं में वाह्य विकारों द्वारा आंतरिक विकारों की शांति उनके शमन का उपाय अरस्तू को ज्ञात था और संभव है, वहां से उन्हें विरेचन सिद्धांत की प्रेरणा मिली हो।
- ३. **कला परक अर्थ**-प्रोफेसर बूचर विरेचन का कला परक अर्थ प्रकट करते हुए कहते हैं कि वास्तविक जीवन में करुणा और भय के भाव दूषित और कष्टप्रद तत्वों से युक्त रहते हैं।
- ४. **नीतिपरक अर्थ**-कारनेई, रेसीन, जर्मन विद्वान बार्नेज इत्यादि ने विरेचन का नीतिपरक अर्थ किया है। इनके अनुसार मनोविकारों की उत्तेजना द्वारा विभिन्न अंतवृत्तियों का समन्वय या मन की शांति और परिष्कृती ही विरेचन है।

विरेचन की विशेषताएं -

- डॉ भगीरथ मिश्र ने विरेचन की विशेषताओं को निम्नांकित बिंदुओं में वर्णित किया है-
- १. विरेचन और द्रवण त्रासदी द्वारा ही हो सकता है।
- २. इसके लिए भय और करुणा के भावों का समय नियोजन और प्रदर्शन आवश्यक है।
- ३. घटनाओं के तथा नायक के चैन में बड़ी सावधानी अपेक्षित है ।
- ४. विरेचन यद्यपि दुख आत्मक परिस्थितियों और घटनाओं के प्रदर्शन से होता है परंतु आनंदा अनुभूति, आत्म परिष्कार से नैतिक बल तथा धार्मिक संतुष्टि की प्राप्ति होती है।
- ५. इसमें कलात्मक आनंद अनुभूति, आत्म परिष्कार से नैतिक बल तथा धार्मिक संतुष्टि की प्राप्ति होती है ।

विरेचन- सिद्धांत पर आक्षेप-

- अनेक समीक्षकों ने विरेचन सिद्धांत की आलोचना की है। लूकस जैसे आलोचकों का मत है कि वास्तव में त्रासदी उत्तेजक होती है। लूकस कि यह भी मान्यता है की त्रासदी में तो मानसिक रोगों की औषधि है और ने रंगशाला बल्कि यह एक अस्पताल है। विरेचन सिद्धांत पर आलोचक यह भी आरोप लगाते हैं कि त्रासदी में प्रदर्शित भाव अवास्तविक होते हैं जो हमारे भावों को उत्तेजित नहीं करते ,विरेचन की बात तो बहुत दूर है। विरेचन से संबंधित यह आक्षेप सही नहीं है। डॉ नगेंद्र ,डॉ निर्मला जैन इत्यादि भारतीय काव्यशास्त्रियों ने इन आक्षेपों को अस्वीकार किया है।

निष्कर्ष-

अरस्तू का विरेचन सिद्धांत साहित्य शास्त्र की एक महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट उपलब्धि है अरस्तू पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रीढ़ है, चीन के सिद्धांतों की भाव भूमि पर पाश्चात्य काव्यशास्त्र का शीश महल खड़ा है। उनके विरेचन सिद्धांत ने न सिर्फ पाश्चात्य काव्यशास्त्र को अपितु भारतीय काव्यशास्त्र को भी प्रभावित किया है। उन्होंने विरेचन सिद्धांत के द्वारा जिन मनोविकारों के शमन की चर्चा की, उसके आधार पर भारत में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का मार्ग 'हृदय की मुक्त अवस्था' के रूप में प्रशस्त हुआ है। वस्तुतः विरेचन सिद्धांत अरस्तू की एक महान उपलब्धि है।

धन्यवाद